

## ‘तुलसी-सम्मान’ अलंकरण के प्रत्युत्तर में

[लोक जागरण (तुलसी शोध संस्थान) एक सांस्कृतिक संस्था जो नगर निगम, विकास प्राधिकरण एवं जल संस्थान, इलाहाबाद के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्थापित की गई है, के द्वारा संत तुलसी जयंती (22.08.07) के अवसर पर निम्न तीन को ‘संत तुलसी सम्मान’ से अलंकृत किया गया:-

1. जगद्गुरु महामहोपाध्याय श्री रामभद्राचार्य जी महाराज, कुलपति, विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट।

2. माननीय श्री रमेश चन्द्र लाहोटी, भारत के पूर्व न्यायाधिपति।

3. पद्मश्री बेकल उत्साही, पूर्व संसद सदस्य (राज्य सभा)।

इस अवसर पर आयोजित समारोह में अध्यक्षता श्री रामभद्राचार्य जी महाराज ने की।

श्री रमेश चन्द्र लाहोटी ने मुख्य अतिथि की हैसियत से कार्यक्रम में भाग लिया।

‘तुलसी सम्मान’ से अलंकरण के उत्तर में दिया गया माननीय न्यायमूर्ति श्री रमेशचन्द्र लाहोटी, पूर्व प्रधान न्यायाधीश, भारत का वक्तव्य]

‘तुलसी जयंती’ के पावन अवसर पर संत कवि, राष्ट्र कवि, विश्व कवि एवं कालजयी कवि संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसी दास जी के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन और आदराजंली। गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित रामचरितमानस सारे विश्व में वंदनीय है। एक श्रेष्ठ धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ग्रंथ के रूप में इस रचना की महत्ता समयातीत है। तुलसी साहित्य एवं विशेषकर रामचरितमानस की उपादेयता और महत्ता विगत पांच शताब्दियों से निरन्तर बढ़ती जा रही है और बढ़ती रहेगी। इसीलिए यह रचना कालजयी है। इस रचना और रचनाकार को, जब तक मानवता का अस्तित्व है, कभी विस्मृत नहीं किया जा सकेगा। उनके संदर्भ में किसी कवि द्वारा लिखी गई ये पंक्तियां बहुत समीचीन हैं:-

‘मैं रहूं या न रहूं, मेरा पता रह जाएगा।

डाल पर यदि एक भी पत्ता हरा रह जाएगा।।’

जब तक किसी भी वृक्ष की डाल पर एक भी हरा पत्ता दिखता रहेगा, तुलसी और रामचरितमानस विस्मृत नहीं हो सकेंगे।

आज के इस श्रेष्ठ आयोजन के लिए ‘लोक जागरण’ को बधाई, साधुवाद और अभिनन्दन। इस संस्था के परिचय में कहा गया है कि यह संस्था नगर निगम, विकास प्राधिकरण और जल संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की एक सांस्कृतिक संस्था है; वे लोग इससे जुड़े, संस्था को जन्म दिया और इसका पोषण कर रहे हैं। कहा गया है कि यह संस्था ‘छोटे लोगों’ की संस्था है जिसे ‘बड़े लोगों’ का संरक्षण प्राप्त है। जो मनीषी इस संस्था को संरक्षण दे रहे हैं उनके नाम मैंने पढ़े। ये वे लोग हैं जिनकी स्वच्छ और निर्मल छवि है, जिन्होंने यश और समृद्धि का अर्जन कर इस नगर की सांस्कृतिक गतिविधियों में अपना

स्थान बनाया है। इन सभी का नाम इस क्षेत्र के लोग बड़े आदर के साथ लेते हैं। इस संस्था के गठन और गतिविधियों में प्रजातंत्र की सफलता का रहस्य छुपा है। 'छोटे-छोटे लोग' अर्थात् जन सेवक संस्कृति से जुड़ें और उनके प्रकल्पों और कार्यक्रमों को स्थायित्व प्रदान करने में समाज के सुयश और सुसमृद्धि से संपन्न अनुभवी व्यक्ति अपना योगदान दें तो प्रजातंत्र सही दिशा में गतिमान रह सकता है। स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री ऐसे यशस्वी प्रधानमंत्री हुए हैं जिनका कद ही छोटा था किन्तु उन्होंने काम बहुत बड़े-बड़े किए। वे अपने को सदैव छोटा ही समझते थे। एक बार कुछ पत्रकारों ने श्रीमती ललिता देवी शास्त्री से पूछा कि शास्त्रीजी की सफलता, सादगी और विनम्रता का रहस्य क्या है? उन्होंने कहा कि शास्त्रीजी गुरुनानक के इस सूत्र में दृढ़ विश्वास रखते हैं—

‘नानक नन्हे ॥ रहो जैसे नन्हीं दूब।

रूख सूख सब जाएंगे दूब रहेगी दूब॥’

बड़े होकर वृक्ष सूख सकते हैं, उनका अस्तित्व समाप्त हो सकता है किन्तु दूब छोटी होने के कारण चिरजीवी होती है, सदैव हरी बनी रहती है और यदि कभी सूख भी जाए तो फिर हरी हो जाती है। छोटे बनकर रहो पर काम बड़े करो। दूसरी ओर, जो समाज के सहयोग से ऊपर उठते हैं, यश और समृद्धि का अर्जन करते हैं उनका कर्तव्य है कि 'दूब' की सांस्कृतिक गतिविधियों को अपना सहयोग और संरक्षण दें और उन्हें बढ़ाएं। ऐसे 'वृक्ष' जब अपनी भूमिका का निर्वाह 'वृक्ष' होकर भी नहीं करते तो रहीम दास जी जैसे संत कवि द्रवित और संतप्त हो उठते हैं और कहते हैं—

‘रहिमन अब वे विरख कहं जिनकी छांव गंभीर।

‘बागन विच विच देखिअत केहुड़ कुंज करीर॥

रहीमदास जी कहते हैं कि समाज में सांस्कृतिक गतिविधियों के अभाव का कारण यह होता है कि अब वे वृक्ष ही नहीं दीखते जिनकी गंभीर छाया में उत्कृष्ट गतिविधियां आश्रय लेती हैं, अब तो ऐसे कंटीले वृक्षों की भरमार है जिनमें न फल होते हैं, न जिनसे छाया मिलती है।

प्रयागराज की इस भूमि को नमन करता हूं जिसमें 'दूब' भी है, 'वृक्ष' भी हैं और तुलसी जयंती जैसा समारोह और तुलसी सम्मान अलंकरण जैसी श्रेष्ठ गतिविधियां होती रहती हैं।

जगद् गुरु रामभद्राचार्य जी महाराज को 'तुलसी सम्मान' से विभूषित किया गया। 'तुलसी सम्मान' क्या है और क्यों दिया जाता है, इसकी पृष्ठभूमि आदरणीय श्री प्रेमशंकरजी गुप्त, पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, जो स्वयं राम भक्त और तुलसी साहित्य के विद्वान हैं, ने

प्रस्तुत की। साथ ही उन्होंने उनका भी परिचय प्रस्तुत किया जिन्हें यह सम्मान दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वामी श्री रामभद्राचार्यजी को तुलसी सम्मान देने से स्वामीजी का सम्मान भी बढ़ा है और 'तुलसी सम्मान' का भी सम्मान बढ़ा है। यह बहुत ही विलक्षण बात है और तुलसी सम्मान के लिए स्वामीजी के चयन का औचित्य दर्शाती है। कुछ समय पहले मैं ऋषिकेश गया था, वहां मैंने एक मन्दिर के दर्शन किए। उस मंदिर में भारतवर्ष में प्रचलित सभी प्रमुख धर्मों के आराध्य देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं और उनकी पूजा अर्चना होती है। इस मन्दिर में अनेक प्रेरक सूक्तियां लिखी हुई हैं। उन्हीं में से एक है—

‘अब तो मेरे इश्क का कुछ और ही अंदाज़ है।

मुझको उनपे नाज़ है, और उनको मुझपे नाज़ है।।’

स्नेह और सम्मान की महत्ता तभी है जब इनके आदान-प्रदान से जो देता है उसका भी सम्मान बढ़े और जो लेता है उसका भी सम्मान बढ़े। परमपूज्य स्वामीजी के इस 'तुलसी सम्मान' से विभूषित होने के अवसर पर उनका अभिनन्दन और उनके श्रीचरणों में नमन।

पद्मश्री बेकल उत्साहीजी से मैं लगभग 30-40 वर्षों से परिचित हूं। मेरी जन्मभूमि गुना नगर में एक मुशायरे में मैंने उन्हें पहली बार सुना था। उनके गीत कानों के माध्यम से हृदय में उतर जाते हैं और आत्मा को झंकृत कर देते हैं। उस समय तरन्नुम में गाए हुए उनके कुछ गीत और गज़लें आज भी मेरे मानस में गूंजती हैं। मैंने उनकी कुछ रचनायें उन ही के स्वर में ध्वनि-मुद्रांकित कर ली थीं। उस टेप को जो सुनते हैं उसकी प्रति अवश्य मांगते हैं। अब तक कोई 100-150 प्रतियां कराकर मेरे मित्रों और उनके प्रशंसकों के बीच बांट चुका हूं। मेरे मित्र पूछते हैं कि जिसने यह रचना रची है और गायिकी का स्वर दिया है वह कौन है? मैं रहस्य के भाव में कहता हूं कि वे एक 'कुम्हार' हैं। वे आश्चर्य से पूछते हैं कि साहित्य के संदर्भ में 'कुम्हार' से क्या आशय है? मैं कहता हूं कि बेकल उत्साही उस शख्सियत का नाम है जिसके हाथों में आकर भाषा, चाहे हिन्दी हो, चाहे उर्दू हो, चाहे फ़ारसी हो या कोई और, कच्ची मिट्टी की तरह खेलती है और जैसे कुशल कुम्हार कच्ची मिट्टी को जैसा चाहे वैसा रूप और आकार दे देता है वैसे ही बेकल उत्साही भाषा से चुने गए शब्दों को जैसी चाहें वैसी विधा में पिरोकर हृदयग्राही प्रस्तुति कर देने की क्षमता रखते हैं। बेकल उत्साही वे हैं जिन्होंने हिन्दी में गज़ल लिखीं और उर्दू में दोहे। साहित्य सृजन में उन्होंने चमत्कारिक कृतियां रची हैं। तुलसी के समन्वयवाद की झलक उनके द्वारा रचित साहित्य में मिलती है। उनकी रचनाओं के कुछ छोटे-छोटे संग्रह प्रकाशित हुए हैं। आज विश्वविद्यालयों में उनकी रचनाओं पर शोधकर्ता शोध कर रहे हैं।

उनकी छोटी-छोटी पुस्तकों में प्रकाशित छोटी-छोटी रचनाओं पर बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जा रहे हैं। मेरे पूर्व वक्ता के रूप में सीमित समय में उन्होंने संत तुलसी को विनम्र श्रद्धांजली दी, तुलसी के प्रति अपने अपनत्व के भाव को शब्दबद्ध किया और तुलसी की प्रशस्ति में एक दो स्वरचित दोहे पढ़े। श्रोताओं की प्यास अनबुझी रह गई। उन्हें कुछ देर और सुन पाते तो सभी को अच्छा लगता। किन्तु 15-20 मिनट के सीमित समय में उन्होंने जो कुछ कहा इससे भी विद्वान श्रोता समुदाय आश्चर्यचकित हुआ है कि वे 'तुलसी सम्मान' से अलंकृत होने के लिए अधिकारी पात्र हैं।

मुझे भी तुलसी सम्मान के लिए चुना गया और स्वामीजी के कर कमलों से उसे प्राप्त करने का सौभाग्य भी मुझे मिला। मुझे अब तक यह कौतुहल बना हुआ है कि तुलसी सम्मान के लिए मुझे क्यों चुना गया? चयनकर्ताओं की दृष्टि में मैंने ऐसा क्या किया है, जो मुझे सम्मान का पात्र बनाता है। मुझे प्रसन्नता तो हो रही है किन्तु यह संकोच भी हो रहा है कि आज मैं उस पंक्ति के छोर पर जा बैठा हूँ जिस पंक्ति का प्रारंभ पूज्य संत श्री रामकिंकर जी और मुरारी बापू से हुआ है और जिसे आदरणीय श्री प्रेम शंकरजी गुप्त जैसे मानस-मनीषी महानुभावों ने आगे बढ़ाया है। मेरा तुलसी साहित्य पर पांडित्य का तो प्रश्न ही नहीं उठता, उसका गहन अध्ययन भी नहीं है। आदरणीय श्री प्रेम शंकरजी गुप्त ने कहा कि भारतीय संस्कृति और तुलसी के साहित्य से जिन मानव मूल्यों और आदर्शों का प्रवाह होता है मेरा उनके प्रति विश्वास है और यथाशक्ति मैं उन्हें अपने जीवन में अनूदित करने के लिए प्रयत्नशील रहता हूँ, इसी कारण मैं चयनकर्ताओं की आंखों में 'चुभ' गया। उनके प्रति सादर कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए भी मैं इस अभिव्यक्ति से अपने आप को रोक नहीं पा रहा हूँ कि मैं इस सम्मान के योग्य न होते हुए भी आपके स्नेह और अनुकम्पा के वशीभूत ही इसे स्वीकार कर रहा हूँ। मुझे तो लगता है कि यह प्रभु श्रीराम की ही कृपा है। वे अकारण ही करुणा करते हैं। उनकी कृपा हो जाए तो अंधा देख सकता है, बहरा सुन सकता है, और गूंगा पंचम स्वर में गा सकता है 'जाकी कृपा पंगु गिरि लंघहि, रंक चले सिर छत्र धराई।।' मेरे जैसे व्यक्ति के लिए 'तुलसी सम्मान' रंक के सिर पर छत्र ही तो है!

इतना अवश्य स्वीकार करता हूँ, सम्पूर्ण विनम्रता के भाव के साथ कि भगवान श्री राम के चरणों में मेरी अटूट श्रद्धा और दृढ़ विश्वास भी है। वे अकारण ही करुणा करते हैं और इसलिए मुझे अपनी कृपा का पात्र बना कर, मेरे बिना कुछ किए ही, उन्होंने अपनी कृपा का दान किया है। तुलसी सम्मान के लिए मेरा चुना जाना कुछ ऐसा ही है जैसे कि रेती

में नाव चलना। स्वामी राजेशानन्दजी अपने प्रवचनों में बहुधा एक शेर पढ़ा करते हैं जो इस अवसर पर मेरे संदर्भ में बहुत उपयुक्त है—

प्रभु श्री राम सर पर हों तो मस्ती दिल में रहती है,  
किसी की नाव पानी में, यहां रेती में चलती है।

रामचरितमानस का एक ईदय स्पर्शी आध्यात्मिक प्रसंग है। महाराज मनु और महारानी शतरूपाजी ने कठोर तपस्या की। उनका अभीष्ट था कि भगवान पुत्र रूप में उनके यहां जन्म लें। तपस्या सफल हुई। भगवान ने उन्हें दर्शन दिए और महाराज मनु से कहा कि जो मांगना हो मांग लो। महाराज मनु भगवान की कृपा से इतने संकुचित हो गए कि उनसे कुछ मांगते ही नहीं बना। भगवान ने कहा— ‘सकुचि बिहाइ मांगि नृप मोहि, मोरे नहिं अदेय कछु तोहि।’ भगवान ने भक्तों को उकसाया कि संकोच छोड़ कर जो मांगना हो मांग लो क्योंकि उनके लिए ऐसा कुछ भी नहीं है जो अदेय हो। मानस के टीकाकार उक्त अर्धाली की व्याख्या दो प्रकार से करते हैं। एक अर्थ तो यह है कि भगवान ने कहा कि संकोच छोड़ कर मुझसे जो मांगना हो मांग लो। दूसरा अर्थ कुछ व्याख्याकार यह बताते हैं कि भगवान तो अन्तर्यामी हैं। वे जानते थे कि मनु और शतरूपा क्या चाहते हैं। वे तो भगवान को ही चाहते थे। अस्तु भगवान ने उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि संकोच छोड़ कर ‘मुझसे मुझ ही को’ मांग लो।

भक्त बहुधा दो प्रकार के होते हैं। एक, वे जो भगवान से कुछ चाहते हैं और, दूसरे वे जो भगवान से भगवान को ही चाहते हैं। भक्त का एक तीसरा प्रकार भी होता है जो न भगवान से कुछ चाहते हैं और न भगवान को ही चाहते हैं; भगवान ही उन्हें चाहते हैं। इस तीसरे प्रकार में मेरे जैसे स्वार्थी लोग आते हैं जो अवसर पाते ही ऐसे लोगों की कतार में सम्मिलित हो जाते हैं जो भगवान को चाहते हैं या भगवान से चाहते हैं। वे स्वयं न भगवान को चाहते हैं न भगवान से चाहते हैं पर भगवान उन्हें चाहते हैं इसलिए भगवान उन पर कृपा करके उन्हें भी कुछ दे देते हैं। मानस में कहा है कि— ‘जो इच्छा करिहुं मनमाहीं। प्रभु प्रसाद कछु दुर्लभ नाही।’ प्रभु प्रसाद तो प्राप्त होता है किन्तु मन में इच्छा करनी पड़ती है। परन्तु प्रसाद की महत्ता तब और भी बढ़ जाती है जब बिना इच्छा किए ही और बिना पात्रता के भी प्रसाद प्राप्त हो जाता है और तब प्रसाददाता की अपार करुणा और कृपा की अनुभूति होती है। मेरे संदर्भ में तुलसी सम्मान की प्राप्ति बहुत ठीक-ठीक फिराक साहब के इस शेर से होती है जिसे बेकल उत्साही साहब की मौजूदगी में अपनी गुस्ताखी की माफी मांगते हुए अर्ज करता हूं—

काम आ गई फ़िराक़ मोहब्बत हुसैन की,

क़लमा पढ़े बग़ैर मुसलमान हो गया।

इस विनम्रता और कृतज्ञता के भाव के साथ, पृष्ठभूमि में बैठे बाबा तुलसी को प्रणाम करते हुए उनके नाम का यह सम्मान स्वीकार करता हूँ।

दो शब्द तुलसीदासजी के विषय में।

सभी विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि तुलसीदासजी युग प्रवर्तक, क्रांतिकारी और जन-जन के कवि थे। रामचरितमानस और अपने अन्य काव्यों के माध्यम से उन्होंने एक अनूठी समन्वयवादी विचारधारा का प्रवर्तन किया। उन्होंने भक्ति, कर्म और ज्ञान की पृथक-पृथक बह रही तीन विचारधाराओं का ऐसा अनूठा संगम किया कि भक्ति के साथ कर्म, ज्ञान के साथ भक्ति और कर्म के साथ ज्ञान का संयोग बिठाना संभव हो गया। उन्होंने ही मार्ग दिखाया कि गृहस्थ जीवन का निर्वाह करते हुए भी व्यक्ति भक्ति और ज्ञान को उपलब्ध हो सकता है। निर्गुण के साथ सगुण, लोक के साथ परलोक, निम्न के साथ उच्च और यहां तक कि दनुजता के साथ मानवता और इनमें से किसी के भी साथ देवत्व का भी संयोग और समन्वय हो सकता है। तुलसीदासजी का जब जन्म हुआ तब ये सभी विचारधाराएं परस्पर विरोधी विचारधाराओं के रूप में प्रचलित थीं और सामाजिक मान्यता प्राप्त कर चली थीं। तुलसीदासजी ने पौराणिक मान्यताओं का समावेश लोकोपचारों में किया। उन्होंने पौराणिक और वैदिक मान्यताओं का अन्तर भेद भी अपनी समन्वयवादी विचारधारा के माध्यम से तिरोहित किया। उन्होंने स्थापित किया कि चाहे राजनीति हो या जनजीवन, चाहे गृहस्थ हो या सन्यास, चाहे बालक हो या वृद्ध, चाहे पुरुष हो या महिला, चाहे संस्था हो या व्यक्ति— प्रत्येक के लिए मर्यादाएं हैं जिनका निर्वाह अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। तुलसीदासजी ने केवल सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किए बल्कि अपनी कथा के नायक श्रीराम के जीवन और कृतित्व के माध्यम से उन मर्यादाओं को व्यवहार में अनूदित होते हुए दिग्दर्शित किया।

तुलसीदासजी ने उस काल में जन्म लिया जब कृष्ण भक्तों का बोलबाला था। कृष्ण राधा के आध्यात्मिक संबंधों को पृष्ठभूमि में रखकर, उन्हें एक नायक और नायिका के रूप में प्रस्तुत कर और पुरुष और नारी के संबंधों को श्रृंगार के साथ जोड़कर अमर्यादित रहस्य-रोमांचकीय रचनाएं होने लगी थीं। तुलसीदासजी ने श्रृंगार और भक्ति दोनों को ही शील के माध्यम से मर्यादित किया। इसलिए वे क्रांतिकारी कवि कहलाते हैं।

तुलसीदासजी केवल हमारे ही नहीं, संपूर्ण विश्व के हैं। वे विश्व कवि हैं। रामचरितमानस विश्व-ग्रन्थ है। दिनांक 19.08.07 के दैनिक जागरण में डॉ. बद्रीनारायण तिवारी द्वारा लिखित एक संक्षिप्त लेख से तुलसी के संबंध में कुछ विस्मय जनक तथ्यों का ज्ञान हुआ। वे लिखते हैं कि सर्वप्रथम विदेशियों ने तुलसी पर शोध कर यह प्रमाणित किया कि तुलसी वाल्मीकी- रामायण के अनुवादक मात्र नहीं हैं। आगे वे लिखते हैं:- इटली के युवा शोधार्थी लुइजिनियो तैस्सीतोरी ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में 'वाल्मीकि रामायण और तुलसी रामायण का तुलनात्मक अध्ययन' इतावली भाषा में 1911 में किया। वह तुलसी से इतने प्रभावित हुए कि भारत आकर बस गए। उन्होंने लगभग 40 कृतियां अनेक भाषाओं में लिखीं, जिसमें 'शंकराचार्य और रामानुजाचार्य का तुलसी पर प्रभाव' और 'बेसवाड़ी व्याकरण का तुलसी पर प्रभाव' प्रमुख हैं। तुलसी पर दूसरा शोध लंदन विश्वविद्यालय में 1918 में जेएन कारपेंटर ने 'थियोलॉजी ऑफ तुलसीदास' शीर्षक से किया। सोवियत रूस में अलेक्सई वरान्निनोव ने 'रामचरित मानस' का रूसी भाषा में अनुवाद किया। उन्होंने अपनी वसीयत में लिखा कि मेरी कब्र पर मेरा प्रिय दोहा रूसी भाषा के साथ देवनागरी हिन्दी में भी लिखा जाए। बेल्जियम में जन्में डॉ. कामिल बुल्के 1935 में जर्मन भाषा में अनूदित 'रामचरितमानस' की चार पंक्तियां पढ़कर इतने प्रभावित हुए कि जीवन भर के लिए भारत आ गए।

इसीलिए तुलसी विश्वकवि भी हैं और कालजयी कवि भी।

इन्हीं शब्दों के साथ तुलसी के राम का श्रद्धापूर्वक स्मरण। तुलसी के चरणों में सादर नमन। संस्था 'लोक जागरण' का हृदय से अभिनन्दन। तुलसी सम्मान से सम्मानित, इस सम्मान के अधिकारी द्वय- स्वामी रामभद्राचार्यजी एवम् पद्मश्री बेकल उत्साहीजी को बधाई। और, मुझे भी सम्मान प्रदान करने और शान्तिपूर्वक मेरे कुछ स्फुट विचार सुनने के लिए आप सबका आभार।

.....